National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.newresearchjournal.com
Volume 1; Issue 4; August 2016; Page No. 39-41

गोदान में नारी चरित्र

डॉ. रीता शुक्ला
व्याख्याता हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय बयाना भरतपुर, राजस्थान भारत

सारांश
श्गोदान में गाँव की समाजार्थिक व्यवस्था की घुरी के तौर पर किसान की पहचान केंद्रीय स्थिति के रूप में सामने आई है। यहाँ होरी को केंद्रीय पात्र के रूप में प्रेमचंद ने चित्रित किया है। होरी की हार एक व्यक्ति की ही हार नहीं है, बल्कि ग्रामीण संस्कृति और सामंती संस्कृति की हार है। महाजनी सभ्यता के सामने होरी जैसे किसान बेबस और ज़मींदार लाचार है। ज़मींदारों के लिए तो उनके उच्चस्तरीय संबंधों के कारण कुछ राहत तो है लेकिन गरीब किसानों के लिए उनकी जमीन का छीन लिया जाना लगभग मृत्यु के समान है। होरी अपनी पाँच बीघे मौरूसी जमीन उसके लाख प्रयत्नों के बावजूद बचा नहीं पाता। बार–बार लिए गए कर्ज के बदले, लगान चुकाने के ऐवज में धीरे–धीरे उसकी जमीन महाजन और ज़मींदारों की भेट हो जाती है। होरी के इस जीवन संघर्ष में उसकी पत्नी धनिया का बराबर का साथ है। प्रेमचंद होरी का चरित्र दब्बू, ढीला–ढाला, धर्मभीरू दिखाते है तो धनिया को निडर, स्वाभिमानी, मेहनती और साहसी चित्रित करते हैं। आधुनिक विचारधारा के प्रवर्तक प्रेमचंद होरी के संघर्ष को अकेले के संघर्ष के रूप में नहीं बल्कि होरी–धनिया के सांझा संघर्ष के रूप में दिखाते हैं।

मूल शब्द: पीड़ा, अस्तित्व, उत्पीड़न, परिस्थितियों, आत्मविश्वास, धारणा, अभिव्यक्ति, परिचय, चरित्र, प्रसंगानुसार, मेहनत–मजदुरी, आर्थिक सत्ता, मनोभावना, नारी पात्र, पारिवारिक, पात्र, अवहेलना, शोषण

'गोदान में प्रेमचन्द मुख्यत: छोटी जोत के किसान की अस्तित्व रक्षा से चिंतित रहे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में द्रष्टव्य है कि प्रेमचंद ने गाँव–जीवन में पुरुष पात्रों का ही चित्रण नहीं किया है, सिर्फ दातादीन, मंगरू, पटेश्वरी, नोखेराम, को ही उपस्थित नहीं किया है, वरन् धनिया, झुनिया, सिलिया, नोहरी और दुलारी सहुआयन को भी चित्रित किया है। किसान जीवन के विश्लेषण में हमने अधिकतर पुरुष पात्रों को ही आधार बनाया है, लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि प्रेमचंद ने ग्रामीण जीवन में नारी चरित्रों को उचित महत्व नहीं दिया है। प्रेमचंद ने होरी का किसान के रूप में अधूरा चरित्र ही उपस्थित किया है। होरी को ढीला ढाला, गमखोर, सबसे दबने वाला, धर्मभीरू मर्यादा प्रेमी के रूप में उपस्थित किया है। इस रूप में वह भारतीय किसान का प्रतिनिधि नहीं है। धनिया के स्वाभिमानी, निडर, मेहनती, कर्मठ, साहसी रूप से मिलकर ही वह भारतीय किसान की 'संश्लिष्ट प्रतिमा' बन पाता है। धनिया के बिना वह अधूरा पात्र है। श्गोदान' की मूल कथा बेशक होरी–धनिया के संघर्षों और पीड़ाओं की ही है। परंतु इस मूल कथा के साथ–साथ उन्होंने अनेक अवांतर कथाओं और प्रकरणों की भी सृष्टि की है,जिनमें नोहरी, झुनिया, सिलिया, चुहिया, मालती, गोविन्दी आदि अनेक नारी चरित्र हमारे सामने आते हैं। यदि इस दृष्टि से देखा जाए तो 'गोदान के कथाकार के सामने दो ही मुख्य प्रश्न उपस्थित हैं एक किसान के अस्तित्व रक्षा की चिंता, और दो नारीत्व को परिभाषित करने का आधार। किसान जीवन के संदर्भ में 'गोदान का मूल्यांकन विश्लेषण हम पिछली इकाई में कर चुके हैं। अब हम 'गोदान में नारी चरित्रों को समझने का प्रयत्न करेंगे। प्रेमचंद के साहित्य की शुरूआत नारी के उत्पीड़न के विरोध से होती है। उनके प्रथम उपन्यास 'असरारे मआबिद उर्फ देवस्थान रहस्य में मंदिरों में लियों को मूर्ख बनाने और उन्हें ठगने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है। इसके बाद 'प्रेमा', 'सेवासदन 'निर्मला' आदि उपन्यासों एवं अनेक कहानियों में नारी जीवन के विविध पक्षों को उद्घाटित किया गया है। उनकी अन्य रचनाओं में भी नारी जीवन को पर्याप्त महत्व दिया गया है। रंगभूमि में इन्दु और राजा महेन्द्र प्रताप के संबंधों का तनाव व्यक्त हुआ है। 'कायाकल्प में ठाकुर विशाल सिंह के बहु विवाहों का वर्णन है। 'कर्मभूमि के केन्द्र में अंग्रेज सिपाहियों द्वारा मुन्नी के साथ किया गया बलात्कार है। 'गोदान में भी प्रेमचंद ने नारी पात्रों को समुचित स्थान दिया है। यदि गाँव और शहर की अलग–अलग कथाओं का केन्द्र बिंदु खोजें तो स्पष्ट पता चलता है कि शहरी जीवन की कथा के केंद्र में मालती है।

नारी जीवन के प्रति प्रेमचंद का दृष्टिकोण

यह सही है कि गाँव–जीवन का केंद्रीय पात्र होरी है और होरी के किसान बने रहने की चिंता लेखक की मुख्य चिंता है। इस दृ ष्टि से देखा जाए तो किसान संबंधी चिंतन में रचनाकार के मन में जिज्ञासा का भाव नहीं है। इस विषय पर वे मनन कर चुके हैं, संगत निष्कर्षों पर पहुँच चुके हैं। इस विषय पर अब उनको कोई बहस नहीं करनी है। वे जानते हैं कि किसान की समस्याएँ क्या हैं और इसे प्रेमचंद उपन्यास में बताते हैं, समझाते हैं। इसलिए इस प्रकरण में रचनाकार का आत्मविश्वास कथा को गति देता है, चरित्र को दिशा देता है, परिस्थितियों का समग्र मूल्यांकन कर डालता है। कहीं हिचक नहीं है। संकोच नहीं है। यह भाव नहीं है कि सत्य का कोई दूसरा रूप भी हो सकता है, इसकी कहीं कोई संभावना नहीं है। यह 'सत्य' वही है जो लेखक ने देखा है, जो लेखक दिखा रहा है। इसमें विवाद की गुंजाइश नहीं है। संवाद की संभावना नहीं है। इस विषय पर जब भी दो पात्र बात करेंगे, वे एक ही बात को आगे बढ़ाएँगे। उनके संवाद परस्पर पूरक ही होंगे। इसमें परिवर्तन की गुंजाइश लेखक नहीं छोड़ता। यह आत्मविश्वास गंभीर चिंतन मनन के बाद आता है, इसमें कोई शक नहीं। परंतु प्रेमचंद जब नारी पात्रों की तरफ़ मुड़ते हैं, तब उनमें वैसा आत्मविश्वास दिखाई नहीं देता। यहाँ ऐसा लगता है मानों इस पर लेखक को नए ढंग से विचार करना है, लेखक चिंतन करता है तथा चिंतन को आमंत्रित करता है। इस विषय पर अभी प्रेमचंद किसी अंतिम निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सके हैं। इसलिए वे एक ऐसी संभावना छोड़ते जाते हैं कि संभव है कोई कमी रह जाए। अतः संदेह का भाव बना रहता है, बहस समाप्त होते–होते फिर गुंजाइश के लिए जगह छूट जाती है। मालती के शब्दों में लेखक कहता है श्फिर अभी यह कौन जानता है कि स्त्रियाँ जिस रास्ते पर चलना चाहती हैं, वही सत्य है। बहुत संभव है, आगे चलकर हमें अपनी धारणा बदलनी पडे किसान

जीवन के किसी प्रसंग में ऐसी किसी संभावना की गुंजाइश प्रेमचंद ने नहीं छोड़ी है। प्रेमचंद ने बहुत सारे नारी चरित्र सामने रखे हैं। उनके जीवन को अनेक तरह से देखा, जाँचा, परखा, बहस की, विचार किया और फिर भी अंतिम रूप से कुछ कह नहीं पाए। मेहता नहीं कह पाए, मालती नहीं कह पायी, गोविंदी नहीं कर पायी, सरोज नहीं कह पायी। सबने तर्क दिए। तर्क देते हुए भी गुंजाइश छोड़ दी। खुलापन रह गया। एक बात और भी है। 'गोदान में प्रेमचंद ने किसान के रूप में होरी को मन लगाकर चित्रित किया है। होरी की यदि हीरा, गिरधर, शोभा, भोला से तुलना करें तो स्पष्ट दिखायी देता है कि लेखक ने इन पात्रों के साथ न्याय नहीं किया है। इनको पूर्णतः अभिव्यक्त होने का अवसर नहीं दिया गया है। होरी की तुलना में अन्य पुरुष पात्र (किसान) गौण पात्रों से भी कम स्थान घेरे हुए है। लेखक की दृष्टि के केंद्र में बेलारी के आते ही होरी आ जाता है, उसी के चरित्र में शेष पात्रों की चिंताएँ भी घुल–मिल जाती हैं। हाँ दातादीन, झिंगुरी सिंह, नोखेराम, पटेश्वरी के चरित्र फिर भी उभरे हुए हैं, परंतु ये सब किसान पात्र नहीं हैं। ये तो शोषकों की जमात के हैं। इनकी पहचान जरूरी है। ऐसी स्थिति स्त्री पात्रों (किसान) की नहीं है। यहाँ धनिया का एकछत्र साम्राज्य नहीं है। दूसरे नारी पात्रों को भी लेखकीय संरक्षण मिला है। पुनिया, झुनिया, चुहिया, नोहरी आदि सभी पात्र अपना स्वतंत्र जीवन एवं चरित्रगत विशेषताएँ लेकर हमारे सामने आते है।

चरित्र चित्रण की विधि और नारी चित्रण

प्रेमचंद अपने पात्रों का चरित्र चित्रण करने के लिए आम तौर पर चार विधियों का प्रयोग करते हैं। इस विधि के अनुसार लेखक स्वयं प्रस्तुत पात्र के बारे में अपनी राय देता है। उसके जीवन की कुछ घटनाओं का विवरण देते हुए उसके चरित्र के बारे में अपने निष्कर्ष बताता रहता है, जिससे पाठक उस पात्र के बारे में एक विशेष प्रकार की राय बनाते हुए कथा में प्रवेश करता है। इस स्थिति में कई बार प्रेमचंद रौ में बह जाते हैं, वर्णन करते समय प्रस्तुत संदर्भ को ध्यान में रखते हुए अतिरंजित बातें लिख जाते हैं। वे कई बार ऐसी बातें भी लिख जाते हैं जिनका किसी पात्र के भावी विकास से कोई संबंध नहीं होता। भूमिका बाँधते समय, परिस्थितियों का अतिरंजित वर्णन करते हुए वे ऐसी अनेक खटकने वाली बातें भी कह जाते हैं, जो कोई भी कला सजग रचनाकार नहीं लिखता। उदाहरण के लिए झुनिया के चरित्र के इन प्रकरणों को लिया जा सकता है। गोबर झुनिया के प्रारंभिक मिलन के अवसर पर उन्होंने लिखा है। 'वह विधवा है। उसके नारीत्व के द्वार पर पहले उसका पति रक्षक बना बैठा रहता था। वह निश्चित थी। अब उस द्वार पर कोई रक्षक न था। इसलिए वह उस द्वार को सदैव बंद रखती है। कभी–कभी घर के सूनेपन से उकताकर वह द्वार खोलती है, पर किसी को आते देखकर भयभीत होकर दोनों पट भेड़ लेती है। इसी झुनिया के संबंध में लेखक बाद में यह टिप्पणी करता है श्उसे तरह–तरह के मनुष्यों से साबिका पड़ चुका था। दो–चार रूपए उसके हाथ लग जाते थे, घड़ी भर के लिए मनोरंजन भी हो जाता था, मगर वह आनंद जैसे मँगनी की चीज़ हो। उसमें टिकाव न था, समर्पण न था, अधिकार न था। वह ऐसा प्रेम चाहती थी, जिसके लिए वह जिए और मरे, जिस पर वह अपने को समर्पित कर दे। वह केवल जुगनू की चमक नहीं, दीपक का स्थायी प्रकाश चाहती थी। वह एक गृहस्थ की बालिका थी, जिसके गृहणीत्व को रसिकों की लगावटबाजियों ने कुचल नहीं पाया था। झुनिया जब होरी के घर पर रहने लगी तब एक दिन मातादीन आया और झुनिया से चिकनी चुपड़ी बातें करने लगा। वह रोने लगी। मातादीन ने धीरे से उसका हाथ पकड़ लिया। आहिस्ता से उसने हाथ छुड़ाया। इसी समय सोना आयी और उसने पूछा कि मातादीन क्या करने आए थे? झुनिया बोली श्पगहिया माँग रहे थे। मैंने कह दिया यहाँ पगहिया नहीं है। इन विरोधी वक्तव्यों से पाठक उलझन में पड़ जाता है। ऐसे अवसर पर वह प्रस्तुत प्रकरण को सत्य मानकर, पिछली राय परिवर्तित करता चलता है। कई बार कोई पात्र ऐसा व्यवहार कर देता है, जिससे लेखक का वक्तव्य निरर्थक ही नहीं, मिथ्या प्रमाणित हो जाता है। परंतु प्रेमचंद इस ओर विशेष ध्यान नहीं देते। वे राय देने से कभी किसी प्रकरण में चुकते नहीं। वे पात्र के बारे में हमेशा राय देते हैं और अंतिम राय देते हैं। कभी–कभी लेखक के ही अंदाज में एक पात्र दूसरे पात्र के बारे में अपनी राय देने लग जाता है। जिससे उसके व्यक्तित्व का उद्घाटन होता है। पात्रों पर की गयी इन टिप्पणियों में भी अक्सर लेखक की सहमति होती है। उसमें भी वक्ता सर्वज्ञ की तरह बोलता है, जिसमें संदेह की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ता। मेहता एक बार मालती से कहता है। 'तुम सब कुछ कर सकती हो, बुद्धिमती हो, चतुर हो, प्रतिभावान हो, दयालु हो, चंचल हो, स्वाभिमानी हो, त्याग कर सकती हो, लेकिन प्रेम नहीं कर सकतीं। इस वक्तव्य पर मालती टिप्पणी करती है 'झूठे हो तुम, बिल्कुल झूठे। मुझे तुम्हारा यह दावा निस्सार मालूम होता है कि नारी हृदय तक पहुँच जाते हो।' इसी तरह गोविन्दी की राय भी मालती के बारे में खास अच्छी नहीं है। 'मेरी दृष्टि में वह वेश्याओं से भी गयी बीती है, क्योंकि वह परदे की आड़ से शिकार खेलती है। खन्ना भी उसे विवाह या प्रेम के लायक नहीं मानता। आमतौर से ये टिप्पणियाँ भी कथा–प्रवाह में मिथ्या साबित हो जाती है, परंतु इससे वक्ता का व्यक्तित्व भी प्रकट हो जाता है। उदाहरण के लिए गोविन्दी की टिप्पणियों से हम मालती के बारे में न सही परंतु उसके स्वयं के बारे में तो जान ही जाते हैं। गोविंदी खन्ना की पत्नी है, जिसे उपन्यास के आरंभ में लेखक ने कामिनी खन्ना कहकर परिचित कराया है। उसके मन में मालती के प्रति पराजित मन की ईर्ष्या भरी हुई है। जब भी उसके सामने मालती आती है या मालती का जिक्र आता है तो उसे ठेस लगती है, दर्द होता है और उसकी ईर्ष्या कुत्सा के रूप में फूट पड़ती है। उसे शक है कि मालती उसके पति के पीछे पड़ी हुई है या खन्ना मालती से जितना प्रेम करते हैं, उतना ही उसको दुत्कारते हैं। जबकि उपन्यास के पहले दृश्य से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि खन्ना भले ही मालती के आगे– पीछे घूम रहा हो, मालती मेहता के प्रति ही आकर्षित है और मेहता इस सबसे निलिप्त हैं। 'गोदान के पात्र कई बार अपने बारे में वक्तव्य देकर भी अपने चरित्र को उद्घाटित करते हैं।

गोदान में प्रस्तुत किसान नारी पात्र

प्रेमचंद ने किसान नारी की पीड़ा एवं दर्द को किसान जीवन की त्रासदी के साथ ही प्रस्तुत कर दिया है। होरी के घर में अनाज नहीं है, इसका दर्द होरी को भी है और धनिया को भी। पुनिया के घर से एहसान में अनाज पाकर धनिया की जो हेठी हुई है, उसकी मर्मांतक पीड़ा किसान जीवन की पीड़ा है। इसी तरह होरी जब बाहर से लुट कर आता है, तो धनिया उसके सीधेपन पर या भलमनसाहत पर खीझती है, होरी को कोसती है, यह होरी–धनिया का साझा अनुभव है। यह मात्र धनिया की परेशानी नहीं है। धनिया से लताड़ खाता हुआ होरी धनिया से सहमत भी होता है। इस रूप में धनिया होरी की चेतना का दूसरा पक्ष है, उसी का अधूरा भाग है, जिसे होरी ने अपने मन में नष्ट कर दिया है, परंतु प्रेमचंद ने उस चेतना को धनिया की काया में गढ़कर मूर्तिमान कर दिया है। गरीबी, शोषण, अन्याय, अत्याचार, भूखमरी का धनिया का दर्द साझा पारिवारिक दर्द है, जिसे होरी भी झेलता है। होरी और धनिया की लड़ाई और विवाद भी उनका अंतः संघर्ष कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है। इसलिए हम देखते हैं कि उनके आपसी संघर्ष पारिवारिक विघटन तक नहीं पहुँच पाते। इनके बीच बात–चीत बंद हो सकती है। यह कई दिनों तक चल सकती है परंतु इनमें से कोई भी यह नहीं सोचता

कि एक दूसरे को त्याग दे। प्रेमचंद के मन में इसकी बड़ी गाढ़ी तस्वीर है, जिसे उन्होंने मन लगाकर चित्रित किया है। प्रेमचंद ने किसान परिवारों की एक विशेषता का वर्णन किया है,

विशेषतः दलित किसानों में पति–पत्नी के बीच की मार–पीट का वर्णन । मध्यवर्गीय जीवन में इसकी कल्पना नहीं की जा सकती। यदि वहाँ मारपीट हो जाए तो विवाह विच्छेद निश्चित है, क्योंकि मध्यवर्गीय स्त्री अपने अस्तित्वबोध के प्रति सचेत है। जैसा कि रायसाहब की पुत्री एवं दामाद के बीच हुआ। गोबर गाँव छोड़कर शहर जा रहा था तो रास्ते में एक स्थान पर पति–पत्नी आपस में लड़–झगड़ रहे थे। पति ने उससे घर चलने का आग्रह किया, पत्नी ने इनकार कर दिया। देर तक आरजू मिन्नत करने के बाद पति को क्रोध आया और वह उसे घसीटने लगा। इस झगड़े के बीच में गोबर बोल पड़ा। अब विवाद गोबर व पुरुष के बीच होने लगा। गोबर पत्नी का पक्ष ले रहा था। दोनों में मारपीट होने ही वाली थी कि युवती बोली 'तुम क्यों लड़ाई करने पर उतारू हो जी, अपनी राह क्यों नहीं जाते? यहाँ कोई तमाशा है? हमारा आपस का झगड़ा है। कभी वह मुझे मारता है, कभी मैं उसे डाटती हूँ। तुमसे मतलब? फिर थोड़ी देर बाद वह युवती 'गृहिणी बन गई और मारपीट, गाली–गलौज को भूल–भाल कर प्रेमपूर्वक ऐसे बात करने लगी, जैसे कहीं कुछ हुआ ही नहीं। हीरा–पुनिया के बीच भी मारपीट हुई, प्रेमचंद ने उसका भी वर्णन किया है। 'हीरा–बहू अपने घर की मालकिन थी। उसी के विद्रोह से भाइयों में अलगौझा हुआ था। धनिया को परास्त करके शेर हो गयी थी। हीरा कभी–कभी उसे पीटता था। अभी हाल में इतना मारा था कि वह कई दिन तक खाट से न उठ सकी, लेकिन अपना अधिकार वह किसी तरह न छोड़ती थी। हीरा क्रोध में उसे मारता था, लेकिन चलता था उसी के इशारों पर, उस घोड़े की भाँति, जो कभी–कभी स्वामी को लात मारकर भी उसी के आसन के नीचे चलता है।

गोदान में चित्रित मध्यवर्गीय नारी पात्र

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि 'गोदान की शहरी कथा के केंद्र में मालती है। उपन्यास में मालती का प्रवेश रायसाहब द्वारा दी गयी दावत में होता है। इसके बाद जब भी उपन्यास मे शहर आता है, मालती अवश्य आती है। आरंभ में प्रेमचंद ने मालती का परिचय उपहास के स्वर में दिया है। उन्होंने लिखा है 'दूसरी महिला जो ऊँची एड़ी का जूता पहने हुए है और जिनकी मुख छवि पर हँसी फूटी पड़ती है, मिस मालती हैं। आप इंग्लैंड से डाक्टरी पढ़ आयी हैं और अब प्रेक्टिस करती हैं। ताल्लुकेदारों के महलों में उनका बहुत प्रवेश है। आप नवयुग की साक्षात प्रतिमा हैं। गात कोमल, पर चपलता कूट–कूट कर भरी हुई है। झिझक या संकोच का कहीं नाम नहीं, मेक–अप में प्रवीण, बला की हाजिर जवाब, पुरुष मनोविज्ञान की अच्छी जानकार, आमोद–प्रेमाद को जीवन का तत्व समझने वाली, लुभाने और रिझाने की कला में निपुण। जहाँ आत्मा का स्थान है, वहाँ प्रदर्शन, जहाँ हृदय का स्थान है, वहाँ हाव–भाव, मनोद्गारों पर कठोर निग्रह, जिसमें इच्छा या अभिलाषा का लोप–सा हो गया।' इसके विपरीत उन्होंने खन्ना की पत्नी को बहुत आदर सम्मान से प्रस्तुत किया है। 'वह जो खादी की साड़ी पहने बहुत गंभीर और विचारशील–सी है, मिस्टर खन्ना की पत्नी कामिनी खन्ना है।' हालांकि अगले दिन की शिकार पार्टी के दौरान वे उसके अस्तित्व को ही भूल गए। यहाँ तक कि उपन्यास में लेखक उसका नाम भी याद नहीं रखता। यहाँ उसे कामिनी खन्ना कहकर परिचय करवाया गया है, बाद में वह इसे गोविन्दी नाम से संबोधित करता है। आरंभ से ही प्रेमचंद परंपरा और आधुनिकता, भारतीय और पाश्चात्य सभ्यता का द्वंद्व खड़ा करना चाहते हैं। गोविंदी को वे भारतीय नारी के आदर्श के रूप में चित्रित करना चाहते थे। मेहता जैसा विचारशील पुरुष उसी को अपना आदर्श मानता है। परंतु उपन्यास के विकास क्रम में वह इस 'आदर्श की रक्षा नहीं कर पाती तथा मालती के प्रति लेखक के दृष्टिकोण में लगातार परिवर्तन होता रहता है।

निष्कर्ष

'गोदान में गाँव की समाजार्थिक व्यवस्था की घुरी के तौर पर किसान की पहचान केंद्रीय स्थिति के रूप में सामने आई है। यहाँ होरी को केंद्रीय पात्र के रूप में प्रेमचंद ने चित्रित किया है। होरी की हार एक व्यक्ति की ही हार नहीं है, बल्कि ग्रामीण संस्कृति और सामंती संस्कृति की हार है। महाजनी सभ्यता के सामने होरी जैसे किसान बेबस और ज़मींदार लाचार है। ज़मींदारों के लिए तो उनके उच्चस्तरीय संबंधों के कारण कुछ राहत तो है लेकिन गरीब किसानों के लिए उनकी जमीन का छीन लिया जाना लगभग मृत्यु के समान है। होरी अपनी पाँच बीघे मौरूसी जमीन उसके लाख प्रयत्नों के बावजूद बचा नहीं पाता। बार–बार लिए गए कर्ज के बदले, लगान चुकाने के ऐवज में धीरे–धीरे उसकी जमीन महाजन और ज़मींदारों की भेट हो जाती है। होरी के इस जीवन संघर्ष में उसकी पत्नी धनिया का बराबर का साथ है। प्रेमचंद होरी का चरित्र दब्बू, ढीला–ढाला, धर्मभीरू दिखाते है तो धनिया को निडर, स्वाभिमानी, मेहनती और साहसी चित्रित करते हैं। आधुनिक विचारधाराके प्रवर्तक प्रेमचंद होरी के संघर्ष को अकेले के संघर्ष के रूप में नहीं बल्कि होरी–धनिया के सांझा संघर्ष के रूप में दिखाते हैं।

संदर्भ

1. 'गोदान, पृष्ठ–133, पृष्ठ–24, पृष्ठ–40 से 41, पृष्ठ–151, पृष्ठ–69, पृष्ठ–157, पृष्ठ–213, पृष्ठ–208, पृष्ठ–247, पृष्ठ–27, पृष्ठ–44, पृष्ठ–220, पृष्ठ–48, पृष्ठ–131, पृष्ठ–280, पृष्ठ–283, पृष्ठ–53, पृष्ठ–1328,